

आज कल हम घर में भी एक-दूसरे को फोन कर लेते हैं, एक कमरे से दूसरे कमरे में। जैसे-जैसे हम अपने संस्कारों को इतना बदलते गए, असली संस्कार छुप गए। वह इतना छुप गए कि हम उसको फिर ढूंढने लगे। बाहर मांगने लगे लोगों से। कोई सफेद कपड़ा रोज धुलेगा तो सफेद बना रहेगा। अगर इसको एक दिन, एक हफ्ता, एक महीना, दो साल या दस साल नहीं धोया तो कुछ बदल जाएगा? इस पर मिट्टी आएगी और धीरे-धीरे यह इतना बदल जाएगा कि हमें याद नहीं रहेगा कि यह कभी सफेद भी था। फिर हम कहेंगे कि हमें सफेद चाहिए।



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आंखें बंद करें और एक लिस्ट बनाएं कि हमारे मन की स्थिति पर कितने लोगों का प्रभाव पड़ता है। किसके एक शब्द से, किसके व्यवहार से आपके मन में हलचल आ सकती है। कितने लोग हैं? घरवाले, दफ्तर

बहुत होगा, मैं आपसे ज्यादा खुश। हम एक-दूसरे को देखते हैं कि उनके घर यह भी आ गया। उनके घर वह भी चीज आ गई। वह कितने भग्यशाली हैं! लेकिन वह कितने खुश हैं, यह नहीं पता। उनके मन के अंदर की हालत कैसी है, लेकिन उनको सामान खरीदता हुआ देखकर हम अपनी खुशी गंवा देते हैं। एक-दूसरे के साथ तुलना करना, दूसरे की तरह बनने की कोशिश करना... यह सब करते-करते मेरा खुशी का संस्कार घटता गया और उसकी जगह कुछ-कुछ दाग-धब्बे आ गए हैं। आज हमें खुशी चाहिए नहीं। सवाल है कि उन दाग-धब्बों का क्या करना है। अगर हम उसी सफेद कपड़े को 20 साल के बाद भी धोएं, तो क्या वह सफेद हो जाएगा या उसी रंग-रूप में लौट आएगा?

जवाब है नहीं। जैसे कपड़ों को रोज साफ करते हैं, वैसे ही मन पर काम करना है। यह जो शक्ति है आत्मा है, इसके साथ रोज थोड़ा समय बिताना शुरू करें। मतलब अपने आप को याद दिलाए कि खुद को समझने के लिए और दूसरों को समझने के लिए अपने संस्कारों को जानना बहुत जरूरी होता है। सबसे पहले चीज यह याद रखें कि मैं यह शरीर नहीं आत्मा हूँ। अपने उस संस्कार और आदत को देखो जिसको बदलना है। कमजोर संस्कार का उच्चारण नहीं करना है। और जो संस्कार लाना चाहते हैं वही सोचना है। वही बोलना है। बार-बार, हर रोज यह रिपीट करना है कि मैं हमेशा खुश, मैं हमेशा शांत रहूँ। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। मैं सबको देने वाली आत्मा हूँ।

आपने अपना रिमोट कंट्रोल कितने लोगों के हाथ में दिया हुआ है। आंखें बंद करें और लिस्ट बनाएं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है सबके पास रिमोट कंट्रोल है। एक उसके पास छोड़कर, जिसके पास होना चाहिए। टीवी का रिमोट कंट्रोल तो किसी को देते नहीं। तो मन का रिमोट कंट्रोल दूसरों के हाथों में क्यों सौंपे? इस पर विचार करें।

के सहकर्मी या राह चलते लोग भी? जब आप टीवी का रिमोट दूसरे के हाथ में नहीं देना चाहते तो अपने मन का रिमोट किसी दूसरे को क्यों सौंपते हैं?

आएगी...उससे खुशी आएगी। मतलब जिसके घर जितने ज्यादा साधन होते हैं, उसके घर खुशी भी उतनी ही ज्यादा होती है? ऐसा तो नहीं है ना। मेरा सोफा देखो कितना बड़ा है। आपकी तो कुर्सी छोटी-सी है, तो मैं आपसे ज्यादा खुश? बड़ा सोफा है, देखो महंगा भी

खुशी का पासवर्ड किसके पास...!!!

इसी तरह हम कह रहे हैं कि मुझे खुशी चाहिए। बार-बार बस यही दोहराते रहते हैं। बहुत साक्षी होकर अपने आप से पूछिए कि आपको खुशी चाहिए या खुशी मेरा संस्कार है? दोनों में से कौन-सी बात सच है? 'चाहिए' या 'वह मेरा संस्कार है।' किस-किस को लग रहा है कि खुशी दिन-ब-दिन बढ़ने की जगह उतनी ही है या घट रही है, मतलब जीवन में तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। टेंशन बढ़ती जा रही है। चिंताएं बढ़ती जा रही हैं। हमारे पास या तो खुशी हो सकती है या टेंशन हो सकती है, दोनों नहीं हो सकते हैं। हमें खुशी चाहिए नहीं, खुशी दरअसल हमारा संस्कार होनी चाहिए।

लेकिन जब चिंता करते हैं, टेंशन करते हैं, परेशान होते हैं, जब तनाव होता है, तो हमें हमारी खुशी अनुभव नहीं होती है। और फिर हम इस खुशी को बाहर ढूंढने निकल पड़ते हैं। हम सबके पास फोन है। क्या यह फोन आपको खुशी देता है? सालों पहले जिस दिन पहली बार फोन मार्केट में आया था, तो लोग कहते थे यह तो बहुत खुशी देगा। आज वही लोग कहते हैं कि यह फोन तो टेंशन का कारण बन चुका है। लेकिन वास्तविकता क्या है? फोन ना तो खुशी दे सकता है, ना टेंशन दे सकता है। फोन तो सिर्फ एक-दूसरे से बात करने का साधन है। हम यह सोचकर कोई चीज खरीदने जाते हैं कि इससे खुशी



श्रीलंका। भंडारनाईके मेमोरियल इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस हॉल में इंडो श्रीलंका इकोनॉमिक्स समिति ने 183 विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले पहले भारतीय डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को कोलंबो के सांस्कृतिक सदस्य के रूप में शामिल किया। इसके साथ ही डॉ. प्रेमनाथ सी डोलावट्टे और श्रीलंका के सार्क कल्चरल सेंटर के डिप्टी निदेशक डॉ. बिना गांधी के द्वारा डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को 'ग्लोबल आइकॉन' से सम्मानित किया गया।



वर्धा-महा। सुप्रसिद्ध अभिनेता भारत गणेशपुरे को आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी, पवनार सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मधु दीदी व अन्य।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org



सताना-महा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'खुशियों का पासवर्ड' विषयक कार्यक्रम के साथ नशा मुक्त भारत अभियान की लॉन्चिंग के अवसर पर डॉ. सचिन परब, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अंजू लता बहन, सोनू बहन, देवड़ा केंद्र संचालिका दीपमाला बहन, नंदिनी बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित शहर के अनेक प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहे।



गांधीनगर-गुज। प्रशासन द्वारा निर्मल गुजरात 2.0 स्वच्छता पखवाड़ा के तहत गांधीनगर वॉर्ड न.3 के स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, प्रभारी, ब्रह्माकुमारीज से.28 गांधीनगर को सादर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में वार्ड के पार्षद, ब्र.कु. जुगनू बहन, ब्र.कु. मीरा बहन व अन्य भाई-बहनों सहित विभिन्न समाज सेवा संस्था के पदाधिकारी भी शामिल हुए।



नौगांव-म.प्र. नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा नौगांव जेल में नशा मुक्ति प्रदर्शनी लगाकर सभी को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया। इस दौरान ब्र.कु. रीना बहन, जेलर अरविंग खरे व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित कैदी भाई-बहनों मौजूद रहे। इसके साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इस प्रदर्शनी के आयोजन द्वारा सम्पूर्ण नर्स स्टाफ, कम्पाउंडर सहित अन्य भाई-बहनों ने लाभ लिया एवं औरों को नशे से मुक्ति दिलाने के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया। इसके पश्चात् नगर पालिका में यह प्रदर्शनी लगाई गई जहां सभी सफाई कर्मचारियों को ब्र.कु. मोहिनी बहन द्वारा नशा छोड़कर अपने जीवन को सुंदर बनाने का संकल्प दिलाया गया।



दुर्ग-केलाबाड़ी(छ.ग.) ब्रह्माकुमारीज के राजश्री भवन सेवाकेंद्र द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए आर.एल. ठाकुर, संयुक्त संचालक शिक्षा संभाग दुर्ग, डॉ. कृष्णा अग्रवाल, प्राचार्य आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुर्ग तथा ब्र.कु. चैतन्य प्रभा बहन।